

युद्ध की प्रार्थना

मार्क ट्वेन

वह एक बड़े गर्व से भरे उत्साह का समय था. देश ने हथियार उठा ले लिए थे, युद्ध चल रहा था, हर किसी की छाती में देशभक्ति की पवित्र अग्नि जल रही थी; ढोल गूँज रहे थे, बैंड बज रहे थे, खिलौनों वाली बंदूकों की आवाजें आ रही थीं, पटाखे फूट रहे थे; हर किसी के हाथ में और दूर-दूर तक छतों में धूप में चमचमाते झंडे फहरा रहे थे; हर दिन जवान स्वयंसेवक चौड़ी गलियों में अपनी नई वर्दी में ख़ुशी से कूच करते थे, गर्व से भरे उनके पिता, माताएं, बहनें और प्रेमिकाएं ख़ुशी से रुंधे गलों से उनका हौसला बढ़ाते थे; हर रात भरी हुई सभाओं में लोग देशभक्ति के भाषणों को सुनते थे जो उनके ह्रदय की गहराइयों को झकझोर देते थे, और जिनके लिए वह बहते हुए आंसुओं के साथ तालियों की गड़गड़ाहट लुटाते थे; गिरजाघर में पादरी ह्रदय को पिघलाने वाले भाषणों में झंडे और देश के लिए भक्ति का उपदेश देते थे, और युद्ध के देवता का आह्वाहन कर अपने महान अभियान में उसकी मदद मांगते थे.

वह वाकई में ख़ुशी से भरा समय था, और वो आधे दर्जन उतावले लोग जो युद्ध की निंदा कर रहे थे और उसके सही होने पर शक कर रहे थे, उनको ऐसी सख्त और गुस्सैल चेतावनी मिली कि वे अपनी सुरक्षा के लिए जल्दी से छिप गए और फिर उन्होंने किसी को वैसा बोलकर नाराज नहीं किया.

रविवार की सुबह आई- अगले दिन पलटन जंग के मैदान के लिए निकलने वाली थी; गिरजाघर भर गया था; स्वयंसेवक सैनिक वहां थे, उनके जवान चहरे युद्ध के सपनों से चमक रहे थे- आक्रमण के दृश्य, बढ़ता हुआ हमला, चमचमाती हुए घुड़सवार सैनिक, दुश्मन की डर के मारे दौड़, भगदड़, सब ओर फैला हुआ धुआं, दुश्मन का पीछा, उसका समर्पण! फिर युद्ध से लौटकर घर, वीर योद्धा बनकर, स्वागत और सम्मान के सागर में डूबना!

स्वयंसेवकों के साथ उनके प्रियजन बैठे थे, गर्व और ख़ुशी से भरे हुए, और उनके वे पड़ोसी और दोस्त जलन से उन्हें देख रहे थे जिनका कोई बेटा या भाई जंग के मैदान में भेजने के लिए नहीं था, जो झंडे के लिए जीतता वर्ना असफल होने पर सबसे सम्मानजनक मौत मरता. प्रार्थना सभा शुरू हुई; पवित्र ग्रन्थ से युद्ध पर एक अध्याय पढ़ा गया; पहली प्रार्थना कही गई; उसके बाद गिरजाघर को हिला देने वाला वाद्य यंत्र बजा, और सब लोग एक साथ खड़े हो गए, चमकती आँखों और धड़कते हृदय के साथ, और उन्होंने पूरी शक्ति से आह्वाहन किया:

हे सबसे भयावह ईश्वर! तुम जो पूरे संसार को हुक्म देते हो,
बादलों की गर्जना तुम्हारी चीख है और बिजली तुम्हारी तलवार!

उसके बाद लम्बी प्रार्थना हुई. लोगों ने उससे ज्यादा आवेग भरी, दिल को छूने वाली और सुन्दर प्रार्थना नहीं सुनी थी. उसका सार था कि वह दयालु और नेक परमपिता हमारे जवान सैनिकों की रक्षा करेगा, देशभक्ति के उनके कार्य में उनकी मदद करेगा, उन्हें सहारा देगा और उनका हौसला बढ़ाएगा; उनपर कृपा करेगा, उन्हें जंग के समय अपने शक्तिशाली हाथों से हर खतरे से बचाएगा, उन्हें शक्तिशाली और दृढ़ बनाएगा, और उनके खूनी हमले में उन्हें अजेय बनाएगा; उन्हें दुश्मन को कुचलने में मदद करेगा, उनके झंडे और देश को अमर सम्मान और प्रतिष्ठा देगा-

एक बूढ़ा अजनबी गिरजाघर के अन्दर आया और धीरे-धीर पादरी के मंच के पास आगे बढ़ा, उसकी आँखें पादरी पर गढ़ी थीं, उसका लम्बा शरीर पैरों तक फैले लबादे से ढका था, उसके सिर पर बाल नहीं थे, उसकी घनी सफ़ेद दाढ़ी कन्धों तक थी, उसका झुर्रियों से भरा चेहरा अजीब तरीके से फीका पड़ा हुआ था, भूतिया होने की हद तक. सभी की आँखें उसे देखते हुए सोच रही थीं, और वह चुपचाप चलता रहा; बिना रुके वह मंच पर चढ़कर पादरी के बगल में खड़ा हो गया और इन्तजार करने लगा. उससे बेखबर, बंद आँखों के साथ, पादरी ने अपनी प्रार्थना जारी रखी, और अंत में जोर से गुजारिश की "हमारे हथियारों पर कृपा करो, हमें विजय दो, हे ईश्वर, परमपिता, हमारे देश और झंडे के रक्षक!"

उस अजनबी ने पादरी का हाथ छुआ, उससे किनारे होने का इशारा किया- जो चौंके हुए पादरी ने किया- और उसकी जगह खड़ा हो गया. कुछ क्षणों के लिए उसने हैरत पड़े लोगों को अपनी गंभीर आँखों से देखा, जिनमें एक अजीब सी रोशनी भरी हुई थी; फिर उसने भारी आवाज में कहा:

"मैं ईश्वर के सिंहासन से आया हूँ- सर्वशक्तिशाली ईश्वर का सन्देश लेकर!" उसके शब्दों से पूरे गिरजाघर में खड़े लोगों पर बिजली सी गिर गई; अगर उस अजनबी ने यह देखा तो उसने इसपर ध्यान नहीं दिया. "उन्होंने अपने सेवक तुम्हारे मार्गदर्शक की प्रार्थना सुन ली है, और अगर तुम्हारी इच्छा हो तो वे इसे कबूल कर लेंगे, जब मैं, उनका संदेशवाहक, तुम्हें तुम्हारी प्रार्थना का अर्थ समझा दूंगा- यानी तुम्हारी प्रार्थना का पूरा अर्थ. क्योंकि यह इंसानों की बाकी प्रार्थनाओं की तरह ही है जिनमें इंसान जितना बोलता है, अनजाने में उससे कहीं ज्यादा मांगता हैं- अगर वह रूककर सोचे नहीं. ईश्वर और तुम्हारे सेवक ने अपनी प्रार्थना पूरी कह दी है. क्या उसने रूककर सोचा? क्या वह एक प्रार्थना थी? नहीं, वह दो प्रार्थनाएं थीं- एक जो कही, और दूसरी जो नहीं कही. दोनों प्रार्थनाएं ईश्वर के पास पहुँचीं जो सब कुछ सुनता है, कहा हुआ भी और अनकहा भी. इसपर विचार करो- इसे अपने मन में

रखो. अगर तुम अपने लिए कृपा मांग रहे हो, सावधान! कहीं तुम अनजाने में अपने पड़ोसी के लिए श्राप तो नहीं मांग रहे हो. अगर तुम अपनी फसल पर बारिश होने की प्रार्थना कर रहे हो जो उसे चाहिए, ऐसा करने से हो सकता है कि तुम किसी पड़ोसी की फसल के लिए श्राप की प्रार्थना कर रहे हो जिसे बारिश नहीं चाहिए और जिससे उसका नुकसान हो सकता है."

"तुमने अपने सेवक की प्रार्थना सुन ली है- जो उसने शब्दों में कही. मुझे ईश्वर ने आदेश दिया है कि मैं शब्दों में दूसरी प्रार्थना कहूँ- वह प्रार्थना जो पादरी ने – और तुमने भी अपने ह्रदय में- चुपचाप बड़ी उम्मीद से कही. क्या तुमने यह अनजाने में और बिना सोचे कही? ईश्वर करे ऐसा ही हो! तुमने यह शब्द सुने 'हे ईश्वर, हमारे ईश्वर, हमें विजय दो!' इतना काफी है. बोली हुई पूरी प्रार्थना इन शब्दों में सिमट गई. और कहना जरुरी नहीं था. जब तुमने विजय के लिए प्रार्थना की है तब तुमने बिना कहे कई और परिणामों के लिए भी प्रार्थना कि है जो विजय के बाद आते हैं- और आने पर मजबूर हैं. ईश्वर के पास तुम्हारी प्रार्थना के अनकहे शब्द भी पहुंचे. उन्होंने मुझे उस प्रार्थना को शब्दों में कहने का आदेश दिया है. सुनो!"

हे ईश्वर परमपिता, हमारे नौजवान देशभक्त, हमारे ह्रदय के लाडले, युद्ध लड़ने जा रहे हैं- आप उनके साथ रहना! उनके साथ मन-ही-मन हम भी जा रहे हैं अपने घर की शान्ति से दुश्मन को कुचलने के लिए. हे ईश्वर, हमारे ईश्वर, हमें मदद करो अपने गोलों से उनके सिपाहियों के चीथड़े उड़ाने में; उनके मुस्कुराते हुए खेतों को उनके देशभक्तों की फीकी पड़ी लाशों से पाटने में; हमारी मदद करो, उनके घायल और दर्द से छटपटाते लोगों की चीखों तले बंदूकों की गड़गड़ाहट को छुपाने में; हमारी मदद करो आग की लपटों से उनके घर तबाह करने में; हमारी मदद करो उनकी निर्दोष विधवाओं के दिलों को व्यर्थ के दुःख से मरोड़ने में; हमारी मदद करो उन्हें बेघर करने में ताकि वे अपने बच्चों के साथ बिना किसी दोस्त के, फटे हुए कपड़ों में अपने तबाह खेतों में भूखे-प्यासे भटकें, गर्मी में सूरज की झुलसती हुई लपटों में और सर्दियों की बर्फीली हवाओं में, तुमसे मौत की गुहार लगाते हुए मगर उन्हें वह भी नसीब न हो-

हमारे खातिर, जो तुमसे प्रेम करते हैं, हे ईश्वर, उनकी उम्मीदें तबाह कर दो, उनका जीवन झुलसा दो, उनकी यह कष्टपूर्ण यात्रा लम्बी कर दो, उनके कदम भारी कर दो, उनके रास्ते उनके आंसुओं से भर दो, सफ़ेद बर्फ को उनके लहू-लुहान पैरों से लाल कर दो!

हम ये ईश्वर के प्रेम में मांगते हैं, जो प्रेम का सागर है, जो पीड़ितों का सहारा और दोस्त है, और जिसकी मदद हम विनम्रता और पश्चाताप से मांगते हैं.

(थोड़ा रुकने के बाद) "तुमने यह प्रार्थना की है; अगर तुम अभी भी यही चाहते हो तो बोलो! सर्वोच्च सत्ता का संदेशवाहक इंतजार कर रहा है."

...

बाद में सबने कहा कि वह आदमी पागल था, क्योंकि उसकी बातें बेवकूफी भरी थीं.